भजन संहिता 48:14

“क्योंकि यही परमेश्वर हमारा परमेश्वर है सदा सर्वदा के
लिये;
वह मृत्यु तक हमारा अगुवा रहेगा।”

भजन संहिता 48:14 परमेश्वर की वाचा-निष्ठा और उसके अपरिवर्तनीय स्वभाव की एक सशक्त घोषणा है। भजनकार यह स्पष्ट करता है कि इस्राएल का परमेश्वर केवल अतीत में कार्य करने वाला कोई ऐतिहासिक व्यक्तित्व नहीं है, बल्कि वह अनन्त परमेश्वर है जो आज भी और सदा-सर्वदा अपने लोगों का मार्गदर्शन करता रहता है।

जब भजन में कहा गया है, “वह मृत्यु तक हमारा अगुवा रहेगा,” तो यह एक गहरी आत्मिक सच्चाई को प्रकट करता है: परमेश्वर अपने लोगों की जीवन-यात्रा में व्यक्तिगत रूप से सम्मिलित रहता है। उसका मार्गदर्शन आत्मिक दिशा, सुरक्षा, बुद्धि, सुधार और आवश्यकताओं की पूर्ति—सब कुछ सम्मिलित करता है।

1. अपने लोगों के प्रति परमेश्वर की अनन्त प्रतिबद्धता

भजनकार “यही परमेश्वर” कहता है—वही परमेश्वर जिसने अपने आप को

अब्राहम, इसहाक और याकूब पर प्रकट किया; वही जिसने इस्राएल को मिस्र से छुड़ाया। यह कोई नया या दूर का देवता नहीं है, बल्कि वही वाचा निभाने वाला परमेश्वर है जो सदा से अपने लोगों के साथ चलता आया है। वाचा के धर्मशास्त्र में परमेश्वर की उपस्थिति की यह निरन्तरता अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

इब्रानियों 13:8
“यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक सा है।”

यह पद दिखाता है कि परमेश्वर का स्वभाव और उसकी प्रतिबद्धता कभी नहीं बदलती। वह सदा विश्वासयोग्य है।

2. जीवन के हर क्षेत्र में परमेश्वर का मार्गदर्शन

परमेश्वर का मार्गदर्शन केवल धार्मिक या आत्मिक बातों तक सीमित नहीं है। वह जीवन के हर मौसम में हमारे साथ चलने का वादा करता है—चाहे वह रेगिस्तान का समय हो या विजय का, उलझन हो या स्पष्टता का। वह हमारा मार्गदर्शन करता है:

जीवन के निर्णयों में (नीतिवचन 3:5–6)
युद्धों और परीक्षाओं के बीच (निर्गमन 14:14)

आत्मिक वृद्धि और धार्मिकता की ओर (भजन संहिता 23:3)

भजन संहिता 32:8
“मैं तुझे बुद्धि दूँगा, और जिस मार्ग में तुझे चलना होगा उसमें तेरी अगुवाई करूँगा;
मैं तुझ पर दृष्टि रखकर सम्मति देता रहूँगा।”

3. ऐतिहासिक उदाहरण: इस्राएल के लिए परमेश्वर का मार्गदर्शन

निर्गमन के समय परमेश्वर का मार्गदर्शन अत्यन्त स्पष्ट रूप से दिखाई देता है:

दिन में बादल का खम्भा और रात में आग का खम्भा (निर्गमन 13:21)
स्वर्गदूतों के द्वारा सुरक्षा (निर्गमन 23:20)
मूसा, न्यायी, राजा और भविष्यद्वक्ता, जिन्हें लोगों की अगुवाई के लिये खड़ा किया गया

ये सभी बातें दिखाती हैं कि परमेश्वर दूर से नहीं, बल्कि निकट सम्बन्ध में रहकर अपने लोगों का नेतृत्व करता है।

4. मसीह और पवित्र आत्मा में इसकी पूर्णता

अन्ततः परमेश्वर की मार्गदर्शक उपस्थिति यीशु मसीह में पूर्ण रूप से प्रकट हुई। यीशु केवल उद्धार करने ही नहीं, बल्कि अगुवाई करने भी आए। और जब वह स्वर्गारोहण कर गया, तब उसने हमें अनाथ नहीं छोड़ा:

यूहन्ना 16:13
“परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सारी सच्चाई में ले चलेगा; क्योंकि वह अपनी ओर से न बोलेगा,
परन्तु जो कुछ सुनेगा वही बोलेगा, और आने वाली बातें
तुम्हें बताएगा।”

आज भी पवित्र आत्मा के द्वारा विश्वासी अपने जीवन में परमेश्वर के व्यक्तिगत मार्गदर्शन का अनुभव करते हैं। आत्मा हमें सत्य में ले चलता है, पाप के विषय में समझ देता है, और परमेश्वर की इच्छा को पहचानने में हमारी सहायता करता है।

परमेश्वर के मार्गदर्शन में दृढ़ विश्वास

भजन संहिता 48:14 केवल एक काव्यात्मक पंक्ति नहीं है—यह एक गहरी आत्मिक और धर्मशास्त्रीय नींव है। हम पूरे विश्वास के साथ कह सकते हैं, “वह हमारा मार्गदर्शक होगा,” क्योंकि:

वह इतिहास में विश्वासयोग्य रहा है
वह अपने पवित्र आत्मा के द्वारा आज भी सक्रिय रूप से उपस्थित है
वह हमें थोड़े समय के लिये नहीं, बल्कि “मृत्यु तक”—जीवन, मृत्यु और अनन्तकाल तक मार्गदर्शन करेगा

रोमियों 8:14
“क्योंकि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे परमेश्वर के पुत्र हैं।”

यही वह विश्वास है जो हर विश्वासी के हृदय में शान्ति और आश्वासन भर देता है। परमेश्वर केवल हमारे साथ आरम्भ ही नहीं करता—वह हमें अन्त तक विश्वासयोग्य रीति से साथ लेकर चलता है।

प्रभु आपको हर दिन उसके मार्गदर्शन पर भरोसा रखने में आशीष दे।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp